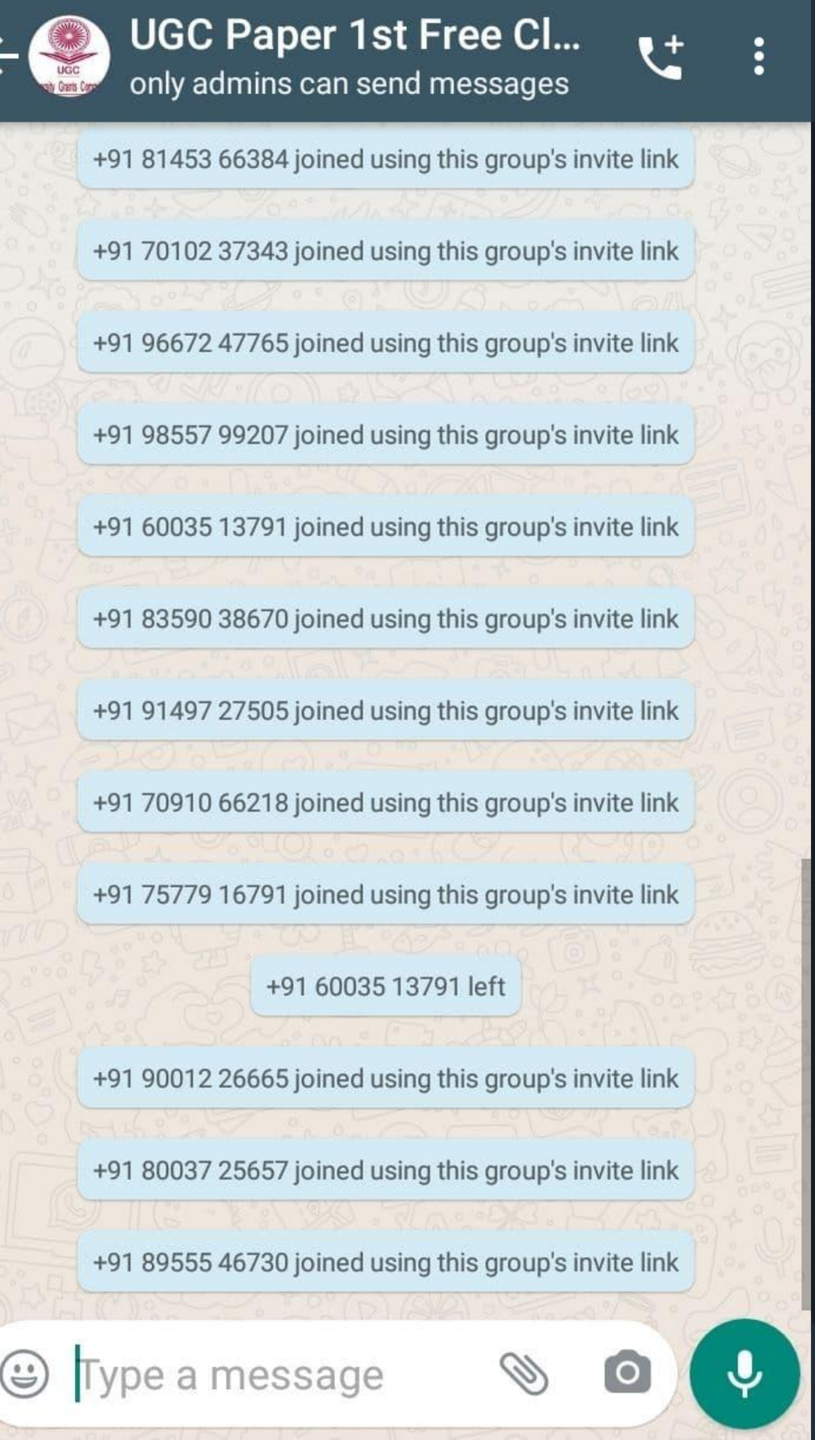
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

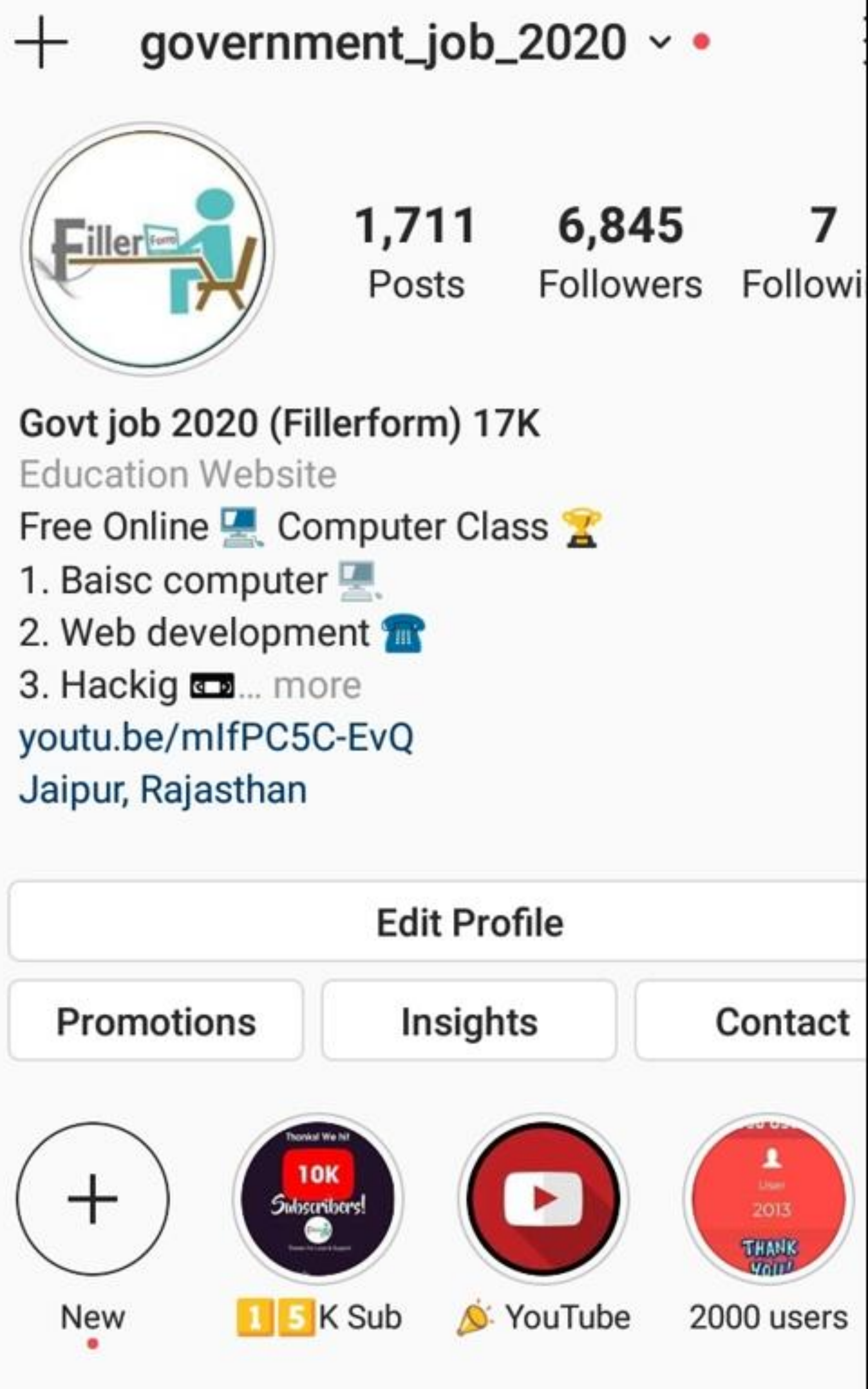
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

100% OFF

fillerform

UGC-NET 2022

09:00 AM
Current GK

11:00 AM
1st Paper

02:00 PM
1st Paper

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

09:00 PM
Management

January
10

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC-NET 2022

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

04:00 PM
Political sciences

06:00 PM
Sanskrti

08:00 PM
Computer Sce.

09:00 PM
Management

JANUARY
17

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

8209837844

www.ugc-net.com

UGC NTA NET (हिन्दी साहित्य)

साहित्यशास्त्र (रस सिद्धांत)

ईकाई-3 भाग-4

8209837844 www.ugc-net.com

काव्य की आत्मा क्या है ?

काव्य, कविता या पद्‌य, साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्‌वारा अभिव्यक्त किया जाता है। ... साहित्य दर्पणाकार विश्वनाथ का लक्षण ही सबसे ठीक जँचता है। उसके अनुसार 'रसात्मक वाक्य ही काव्य है'। रस अर्थात्‌ मनोवेगों का सुखद संचार ही काव्य की आत्मा है।

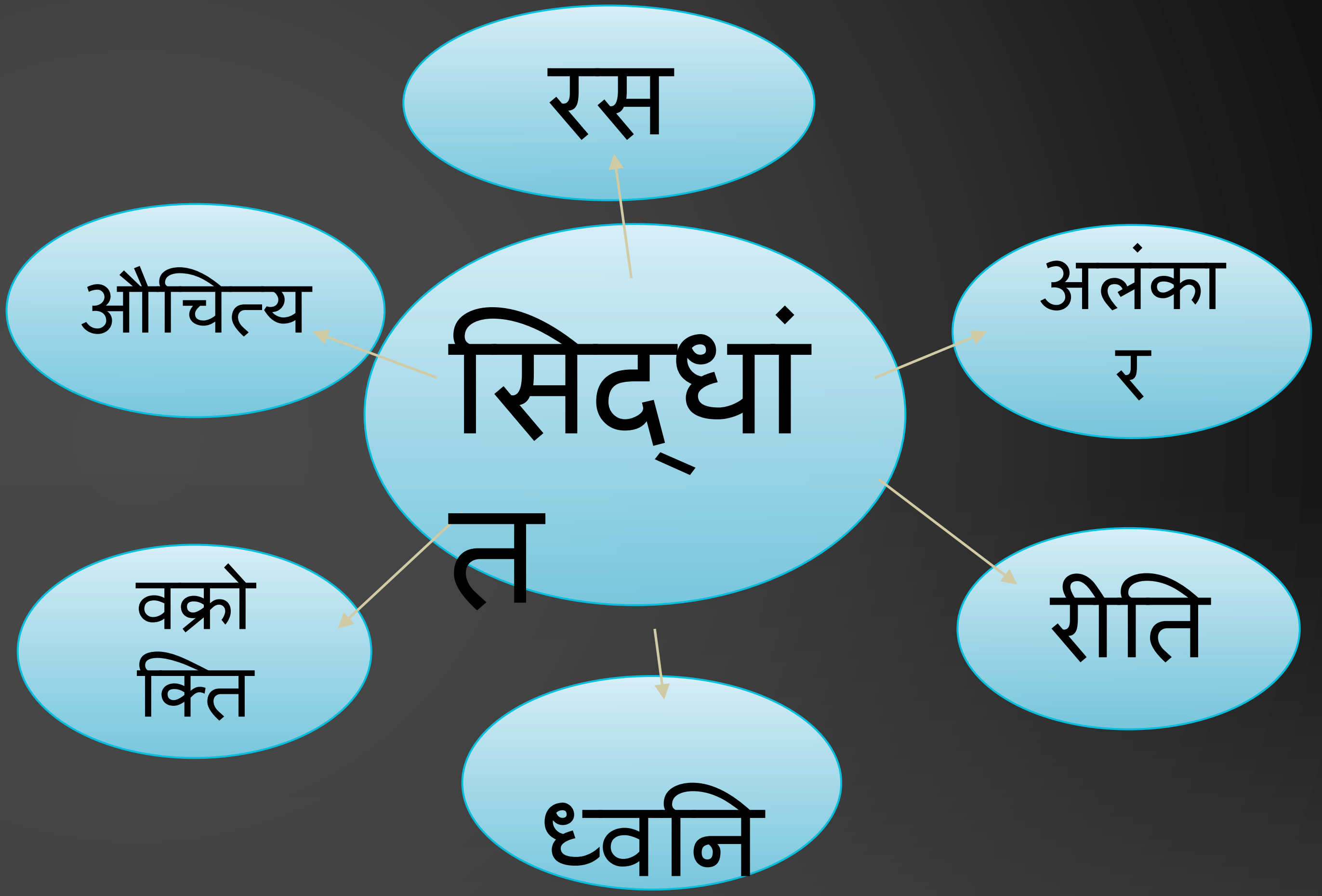

8209837844

www.ugc-net.com

रस का शाब्दिक अर्थ है

रस का शाब्दिक अर्थ है- आनन्द। काव्य में जो आनन्द आता है, वह ही काव्य का रस है। काव्य में आने वाला आनन्द अर्थात् रस लौकिक न होकर अलौकिक होता है। रस काव्य की आत्मा है। संस्कृत में कहा गया है कि "रसात्मकम् वाक्यम् काव्यम्" अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

पारिभाषिक शब्दावली नाट्यशास्त्र में भरत मुनि ने रस की व्याख्या करते हुये कहा है

विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्ररस निष्पत्तिः।

अर्थात विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। सुप्रसिद्ध साहित्य दर्पण में कहा गया है हृदय का स्थायी भाव, जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव का संयोग प्राप्त कर लेता है तो रस रूप में निष्पन्न हो जाता है।

रस विरोधी धारा के कवि	रसवादी धारा
भामह	भट्टलोल
दण्डी	ट्ट
वामन	शंकुक
उद्भट्ट	भट्टनायक
रुद्रट	रुद्रभट्ट

8209837844 www.ugc-net.com

भरतमुनि के अनुसार रस के प्रकार

- स्थाई भाव
- विभाव
- अनुभाव
- संचारी भाव

स्थायी भाव का अर्थ है:- होना

सहृदय के अंत:करण में जो मनोविकार, वासना या संस्कार रूप में सदा विद्यमान रहते हैं तथा जिन्हें कोई भी विरोधी या अविरोधी दबा नहीं सकता, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं।

इनकी संख्या 11 है - रति, हास, शोक, उत्साह, क्रोध, भय, जुगुप्सा, विस्मय, निर्वेद, वात्सलताऔर ईश्वर विषयक प्रेम।

8209837844
www.ugc-net.com

विभाव

विभाव का अर्थ है कारण। ये स्थायी भावों का विभावन/उद्बोधन करते हैं, उन्हें आस्वाद योग्य बनाते हैं। ये रस की उत्पत्ति में आधारभूत माने जाते हैं।

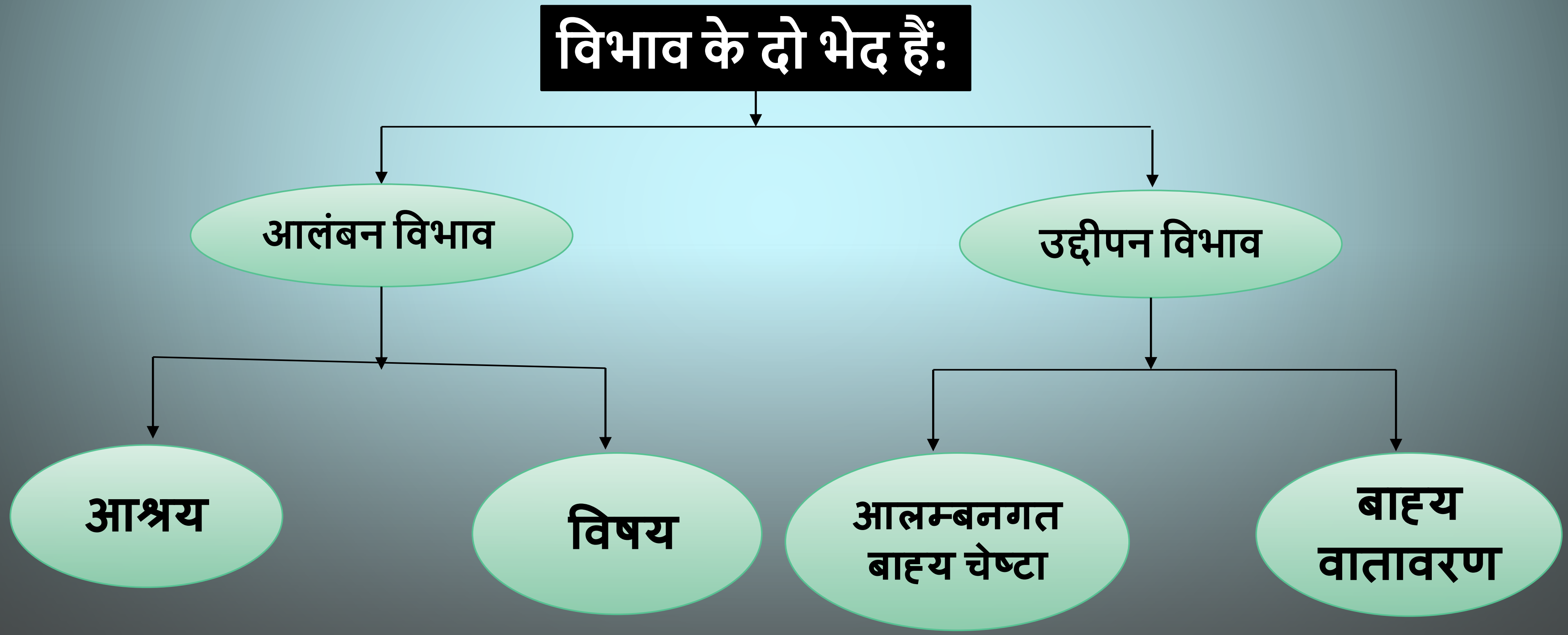

विभाव के दो भेद

आलंबन विभाव और उद्दीपन विभाव

आलंबन: आलंबन विभावजिन पात्रों के द्वारा रस निष्पत्ति सम्भव होती है वें आलंबन विभाव कहलाते हैं। जैसे:- नायक और नायिका।

उद्दीपन: उद्दीपन विभावविषय द्वारा कियें क्रियाएं और वह स्थान जो रस निष्पत्ति में सहायक होते है उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं।

आलंबन के दो भेद होते हैं

आश्रय

जिसमें किसी के प्रति भाव जागृत होते है वह आश्रय कहलाते है

विषय

जिसके प्रति भाव जागृत होते है वह विषय

जैसे:- रौद्र रस में परशुराम का लक्ष्मण पर क्रोधित होना।
यहाँ परशुराम आश्रय और लक्ष्मण विषय हुए

उद्दीपन विभाव को दो भाग

आलम्बनगत बाह्य चेष्टा

विषय द्वारा कियें गयें कार्य आलम्बनगत बाह्य चेष्टा कहलाते हैं।
जैसे:- परशुराम का लक्ष्मण पर कुपित होने के बाद लक्ष्मण की व्यंग्योक्तियाँ

बाह्य वातावरण

रस निष्पत्ति में वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि प्रेमी-प्रेमिका अगर शमशान में प्रेम करें और शत्रु बाग-बगीचे में आमने-सामने आए तो रस निष्पत्ति में यह सहायक ना होगा।

8209837844

www.ugc-net.com

अनुभाव

रति, हास, शोक आदि स्थायी भावों को प्रकाशित या व्यक्त करने वाली आश्रय की चेष्टाएं अनुभाव कहलाती हैं।

ये चेष्टाएं भाव-जागृति के उपरांत आश्रय में उत्पन्न होती हैं इसलिए इन्हें अनुभाव कहते हैं, अर्थात जो भावों का अनुगमन करे वह अनुभाव कहलाता है।

अनुभाव के दो भेद

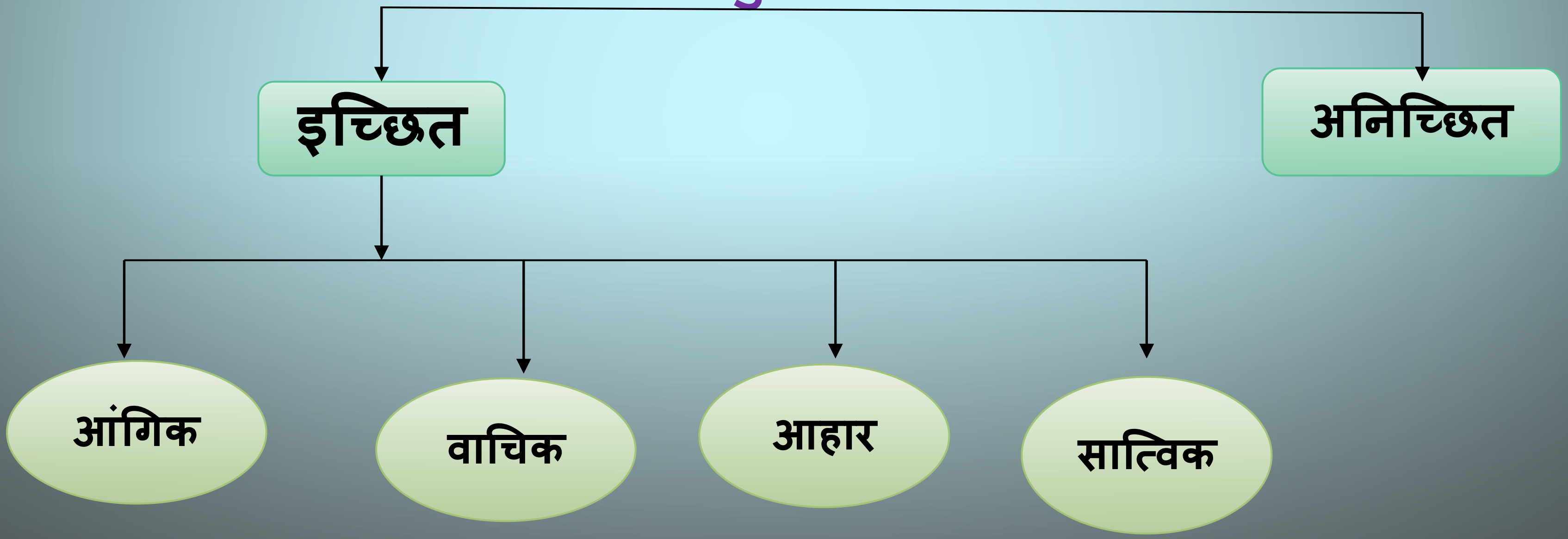

8209837844
www.ugc-net.com

इच्छित: साधारण अनुभाव : अर्थात् (इच्छित अभिनय)

इच्छित के चार भेद हैं।

आंगिक

आश्रय की शरीर संबंधी चेष्टाएं आंगिक या कायिक अनुभाव है।

वाचिक

रति भाव के जाग्रत होने पर भ्रू-विक्षेप, कटाक्ष आदि प्रयत्न पूर्वक किये गये वाग्व्यापार वाचिक अनुभाव हैं।

आहार्य

आरोपित या कृत्रिम वेष-रचना आहार्य अनुभाव है।

सात्विक

सात्विक अनुभाव : अर्थात (अनिच्छित) आठ भेद हैं - स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, वेपथु (कम्प), वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय

8209837844

संचारी

संचारी या व्यभिचारी भावजो भाव केवल थोड़ी देर के लिए स्थायी भाव को पुष्ट करने के निमित्त सहायक रूप में आते हैं और तुरंत लुप्त हो जाते हैं, वे संचारी भाव हैं।

संचारी शब्द का अर्थ है, साथ-साथ चलना अर्थात संचरणशील होना, संचारी भाव स्थायी भाव के साथ संचरित होते हैं, इनमें इतना सार्मथ्य होता है कि ये प्रत्येक स्थायी भाव के साथ उसके अनुकूल बनकर चल सकते हैं। इसलिए इन्हें व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है।

संचारी या व्यभिचारी भावों की संख्या ३३ मानी गयी है - निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दीनता, चिंता, मोह, स्मृति, धृति, व्रीड़ा, चापल्य, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार (मिर्गी), स्वप्न, प्रबोध, अमर्ष (असहनशीलता), अवहित्था (भाव का छिपाना), उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास और वितर्क।

8209837844

www.ugc-net.com

रस आचार्य

भामह
दांडी
वामन
उद्भट
आनंदवर्धन
कुन्तक
महाभोज
क्षेमेद्र
भोजराज

रीतिकालीन आचार्य

केशवदास
कुलपति
देव
भिखारीदास
चिंतामणि

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com